# 1857 क्रांति के प्रथम जनक ''मातादीन वाल्मीकि''

# (The first father of 1857 revolution "Matadin Valmiki")

## • 1857 की क्रांति का नेतृत्व – (Leadership of the revolution of 1857)

1857 की क्रांति की तिथि 31 मई 1857 रखी गई थी। 10 मई 1857 को मेरठ से सर्वप्रथम धन सिंह कोतवाल (गुर्जर) ने अंग्रेजो पर गोली चलाकर की थी। 1857 की क्रांति का नेतृत्व ''बहादुर शाह जफर'' ने किया था। दिल्ली से जनरल बख्त खान, कानपुर से नाना साहब, लखनऊ से बेगम हजरत महल, बरेली से खान बहादुर, बिहार से कुंवर सिंह और फैजाबाद से मौलवी अहमदुल्लाह आदि नेताओं ने लडाई में भागीदारी निभाई थी।

## • मातादीन वाल्मीकि का परिचय – (Introduction of Matadin Valmiki)

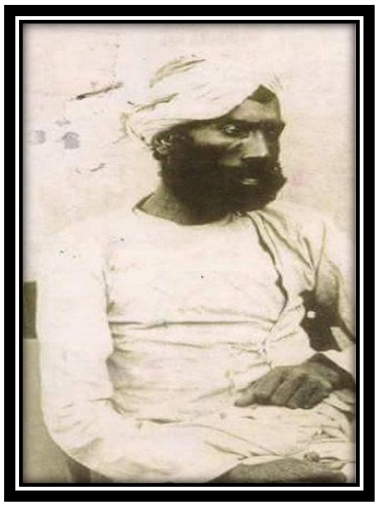



मातादीन वाल्मीकि का जन्म ब्रिटिश हुकूमत वाले मेरठ शहर के एक ''भंगी परिवार'' में हुआ था। शहीद मातादीन के पिता का नाम ''जयनारायण'' था, मातादीन के पूर्वज मेरठ के रहने वाले थे। मगर वे नौकरी के सिलसिले में अंग्रेजों की तत्कालीन राजधानी 'कोलकाता' में बस गए थे। रोजी रोटी के लिए उनका परिवार यूपी के कई हिस्सों की खाक छान चुका था। उस समय की जाति व्यवस्था में भंगियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था इसलिए मातादीन कभी स्कूल नहीं जा पाए। उनका परिवार शुरू से ही अंग्रेजों के संपर्क में रहा, इसलिए मातादीन को अंग्रेंजों की सरकारी नौकरी मिलने में ज्यादा दिक्कत भी नहीं हुई। कलकत्ता से 16 किलोमिटर दूर स्थित ''बैरकपुर छावनी'' में उन्हें ''खलासी'' (मजदूर) की नौकरी मिल गई।

## • मंगल पाण्डे का परिचय –
## (Introduction of Mangal Pandey)

मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई 1827, अकबरपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। कलकत्ता से 16 किलोमिटर दूर बैरकपुर छावनी कोलकाता में ही सेना की एक टुकड़ी "34वी बंगाल इंफेंट्री" का मार्गदर्शन मंगल पाण्डे करते थे। वह अंग्रेजी सेना में काम करने वाले एक भारतीय सैनिक थे, यहीं पर उनकी मुलाकात मातादीन वाल्मीकि से हुई थी। 01 अप्रैल 1857 की घटना को अंजाम देने के बाद मंगल पाण्डे को 08 अप्रैल 1857 को बैरकपुर छावनी में फॉसी पर लटका दिया गया था।

## • मातादीन वाल्मीकि की मलयुद्ध (कुश्ती) घटना –
## (Malyudha (wrestling) incident of Matadin Valmiki)

मातादीन को पहलवानी का भी शौक था इसलिये वह मल्लयुद्ध (कुश्ती) कला में दक्षता हासिल करना चाहते थे, लेकिन अछूत होने के कारण किसी भी हिन्दू उस्ताद ने उन्हें अपना शागिर्द (शिष्य, चेला) नहीं बनाया. वह हर हिन्दू उस्ताद के अखाड़े में मल्लयुद्ध की कला सीखने के लिए जाते लेकिन वहां से उन्हें निराश के साथ लौटना पड़ता था। वहां उनसे वही सलूक किया जाता जो एक वक्त में द्रोणाचार्य के आश्रम में आदिवासी वीर तीरंदाज एकलव्य के साथ हुआ था। लेकिन कहते हैं कि जहां चाह होती है वहां राह भी निकल ही आती है। आखिरकार मातादीन को मल्लयुद्ध सीखाने के लिये एक मुसलमान खलीफा इस्लाउद्दीन जो पल्टन नंबर 70 में बैंड बजाते थे, मातादीन को मल्लयुद्ध सिखाने के लिए राजी हो गए। अपनी लगन की बदौलत मातादीन ने उस्ताद इस्लाउद्दीन से मल्लयुद्ध के सभी गुर जल्द ही सीख लिए थे। इस कला की वजह से ही अब लोग उन्हें पहचानने लगे थे।

मंगल पाण्डे स्वयं भी मल्लयुद्ध के शौकीन थे। एक कुश्ती प्रतियोगिता में मंगल पाण्डे मातादीन का सुदृढ़ शरीर और कुश्ती का बेहतरीन प्रदर्शन देख कर गदगद हो गए। इस्लाउद्दीन के अखाड़े और मातादीन के नाम की वजह से मंगल पाण्डे ने मातादीन को एक मुस्लिम पहलवान समझा था।

एक दिन जब मातादीन ने एक अंग्रेज को कुश्ती में हराया दिया तो, छावनी में काम करने वाले सभी इतने खुश हुये कि उन्होने मातादीन को कंधो पर उठा लिया, तब भीड में से किसी ने उनकी जाति का जिक्र करते हुये कहा कि जिसे तुम लोगो ने अपने कंधो पर उठा रखा है वह भंगी है और इस तरह यह बात पूरी ''बैरकपुर छावनी'' में फैल गई। इस कारण मंगल पाण्डे को भी इस बात की भनक लग गई कि मातादीन भंगी जाति से है फिर क्या था मातादीन के प्रति मंगल पाण्डे का व्यवहार बदल गया। मातादीन को अपनी जाति के कारण बेज्जत होना पडा, इसी कारण मातादीन ने अपनी जाति को ढाल बनाने का निर्णय लिया। एक दिन जानबूझकर सोची समझी रणनीति के तहत मातादीन ने मंगल पाण्डे से पानी का लौटा मॉगा, यह वही दिन था जब 29 मार्च 1857 को पता चला कि जिस बंदूक के कारतूस का वह इस्तेमाल करता है वह गाय और सूअर की चर्बी से बना है।

## • 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की वास्तविक घटना – (Actual incident of freedom struggle of 1857)

12 दिसम्बर 1911 को भारत की राजधानी दिल्ली बनाया गया था इससे पहले अंग्रेजो की पहली राजधानी कोलकाता (कलकत्ता) हुआ करती थी। कलकत्ता से 16 किलोमिटर दूर स्थित बैरकपुर छावनी में अंग्रेजो को कारतूस बनाने की कम्पनी थी। इस छावनी में सिपाहियों के लिए कारतूस बनाए जाते थे। सेना में काम करते हुए मंगल पाण्डे और मातादीन की खासी पहचान हो चुकी थी। मंगल पाण्डे ये भी जान चुका था कि मातादीन भंगी जाति से है। एक दिन जब मातादीन को जोरो से प्यास लगी तो उन्होंने मंगल पाडेय से पानी पीने के लिए पानी का लोटा मांगा, तो मंगल पाडेय ने इसे मातादीन का दुस्साहस समझा और यह कहकर उन्हें पीने के लिए पानी नहीं दिया कि 'अरे भंगी, मेरा लोटा छूकर तू मेरा धर्म भ्रष्ट करेगा और मेरे लोटे को अपवित्र करेगा क्या?

इस पर मातादीन वाल्मिकि ने मंगल पांडे को उनकी पंडाताई याद दिलाते हुए कहा, "पंडत, तुम्हारी पंडिताई उस समय कहा चली जाती है जब तुम और तुम्हारे जैसे चुटियाधारी गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों को मुंह से काटकर बंदूकों में भरते हो।"

ये सुनकर मंगल पांडे का माथा ठिनक गया। क्योंकि बात अब उनकी पंडताई पर आ गई थी। बात मंगल पांडे तक ही नहीं रूकी और एक के बाद एक सेना की सभी टुकड़ियों में

इस बात के चर्चे होने लगे कि जिस कारतूस को वो मुंह से छीलते हैं, वो गाय और सूअर की चर्बी से बना हुआ है।

- **विद्रोह करने वाले पहले व्यक्ति थे मातादीन –**
  **(Matadin was the first person to rebel)**

मातादीन भंगी 1857 की लड़ाई में मास्टरमाइंड थे ये बात अंग्रेजो ने मानी थी इसलिये उन्हे सर्वप्रथम फॉसी पर लटकाया था। इसका पुख्ता सबूत इस बात से पता चलता है कि 01 अप्रैल 1857 की घटना के बाद अंग्रेजो ने विद्रोह करने वालों की लिस्ट तैयार की जिसमें पहला नाम मातादीन वाल्मीकि का था।

मातादीन वाल्मिकि ने सच्चे सिपाही की तरह अंग्रेजो के खिलाफ इस युद्ध को लड़ा था। हालांकि 1857 का ये युद्ध अंग्रेजी हुकुमत को जड़ से उखाड़ तो नहीं पाया लेकिन इस युद्ध ने अंग्रेजी हुकुमत की जड़े जरूर हिला दि थीं। वो उन शुरुआती लोगों में से थे जिन्होंने '1857 की क्रांति' के विद्रोह का बीज बोया। 08 अप्रैल 1857 की घटना के बाद पूरे उत्तर भारत में विद्रोह की ज्वाला भड़क गई।

- **मंगल पाण्डे नही था 1857 की क्रांति का जनक –**
  **(Mangal Pandey was not the father of 1857 revolution)**

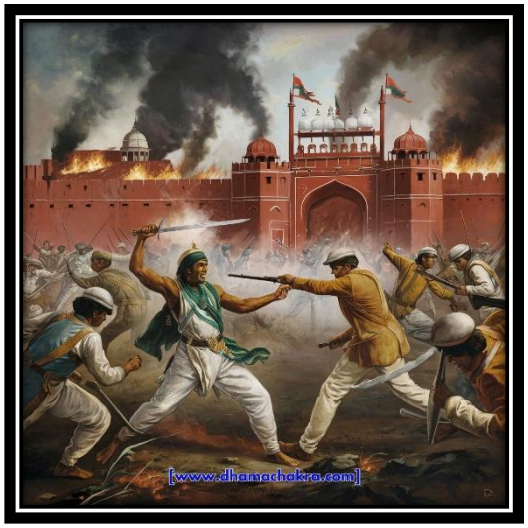


मंगल पाण्डे का विद्रोह करने की असली वजह गाय व सूअर की चर्बी से उसका धर्म भ्रष्ट करना था। मातादीन द्वारा मंगल पाण्डे को जब यह एहसास कराया की मानव मानव में भेद करने वाले तब तेरा ईमान धर्म कहॉ चला जाता है जब तुम गाय और सुअर की चर्बी से बना कारतूस को अपने मुँह से खोलत हो। तब कही जाकर मंगल पाण्डे का माथा ठनका था। यदि मातादीन द्वारा मंगल पाण्डे को यह सब न बताया होता तो शायद मंगल पाण्डे को यह सब कभी पता ही नही चलता, और 01 अप्रैल 1857 की घटना कभी घटती ही नही और ना ही 08 अप्रैल 1857 को मातादीन व मंगल पाण्डे सहित अन्य को फॉसी की सजा होती ही नही।

मातादीन की गाय और सूअर की चर्बी वाली बात सुनकर मंगल पांडे ने ब्रिटिश हुकुमत के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। 01 अप्रैल 1857 की सुबह परेड मैदान में मंगल पाण्डे ने

लाइन से बाहर निकल कर बंदूक तानकर अंग्रेज अधिकारियो को कहा कि तुम गोरे लोग हमसे गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों का इस्तेमाल करवाकर हमारे धर्म और इमान के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। इसके बाद मंगल पांडे ने ब्रिटिश अधिकारियों को गोलियों से भूनना शूरू कर दिया।

मंगल पांडे को वास्तव में इस बात का डर था कि कहीं ये बात लोगो को पता चल गई कि मंगल पाण्डे ने गाय और सूअर की चर्बी लगा कारतूस का प्रयोग किया है तो उसे ब्राह्मण समाज से बहिसकृत कर दिया जायेगा और अछूतो की तरह जीना पडेगा।

## • मंगल पाण्डे ने लडी थी ''धर्म'' की लडाई –
## (Mangal Pandey fought the battle of "Dharma")

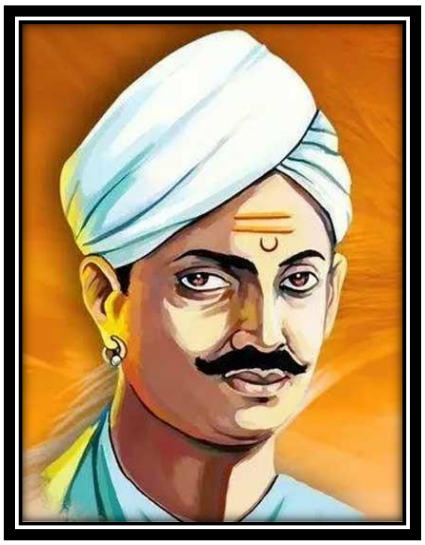

मंगल पाण्डे को 29 मार्च 1857 को जब यह पता चला की जिस कारतूस का वह प्रयोग अपनी बंदूक में करता है वह गाय व सूअर की चर्बी की बनी है तब मंगल पांण्डे का खून खोल गया और अंग्रेज अफसर को गोली मार दी थी। मंगल पांण्डे ने क्यों गोली मारी क्योकि उसका धर्म भ्रष्ट हो गया था, धर्म भ्रष्ट कैसे हुआ, बैरकपुर छावनी में बन रहे गाय व सूअर की चर्बी से बने कारतूस से, कारतूस कहॉ बन रहा था, अंग्रेजो की बनाई कारतूस फैक्ट्री में। इसलिये मंगल पांण्डे ने अंग्रेज अफसर को गोली मारी थी। प्रश्न खडा होता है कि इस सब में मंगल पांण्डे ने आजादी की लडाई कहॉ लडी, वास्तव में उसने तो धर्म की लडाई थी जिसको इतिहासकारों ने बडी चालाकी और चतुराई के साथ मंगल पांण्डे को 1857 की क्रांति का जनक लिखा।

दलितों के लिए ये लड़ाई उनके जल, जंगल और जमीन की लड़ाई थी जब्कि मंगल पाण्डे का विरोध उस व्यवस्था को लेकर था जिससे उनके धर्म पर आंच आ रही थी। ये उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाली बात थी। ये ब्राह्मणवादी नियमों को खतरें में डालता था। मंगल पांडे एक ब्राह्मण थे और गाय और सुअर की चर्बी वाले कारतूसों को मुंह से काटने का मतलब था उनका ब्राह्मण से अछूत हो जाना। क्योंकि जब किसी को ये पता चलता कि मंगल पांडे ने गाय और सूअर की चर्बी को मुंह लगाया है तो न तो कोई उनके साथ खाना खाता, ना उन्हे छूता और शायद मरने के बाद उनका अंतिम संस्कार भी नहीं करता। मंगल को यही डर था जब ये बात सभी में फैल जाएगी तो उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाएगा।

## • 1857 की क्रांति में दलितो का योगदान – (Contribution of Dalits in the revolution of 1857)

बैरकपुर छावनी में काम करने वाले भी अधिकतर लोग दलित थे। इस युद्ध में ना जाने कितनी ही दलित पुरूष और महिलाओं ने भाग लिया था। कानपुर से गंगादीन मेहतर (भंगी), मेरठ से धन सिंह कोतवाल (गुर्जर), कांसगंज से बालू राम मेहतर (भंगी), और चेता राम (जाटव), उदैया चमार, बांके चमार, मक्का पासी, बाबू मंगूराम आदि लोग शामिल थे। इसके अलावा महिलाओं में मुख्य रूप से झॉसी से झलकारीबाई, अवंतीबाई, पन्नाधई, उदादेवी और महावोरी देवी आदि नाम शामिल हैं।

### महत्त्वपूर्ण बिन्दू (Important Point) –

1. 29 मार्च 1857 मातादीन वाल्मीकि को पानी न देते हुए मंगल पांडे ने बोलो था कि 'अरे भंगी, मेरा लोटा छूकर तू मेरा धर्म भ्रष्ट करेगा और मेरे लोटे को अपवित्र करेगा क्या!
2. मंगल पांडे द्वारा जब 01 अप्रैल 1857 को अग्रेजी अधिकारियों को गोली मारते हुए कहा था कि ''तुम गोरे लोग हमसे गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों का इस्तेमाल करवाकर हमारे धर्म और इमान के साथ खिलवाड़ कर रहे हो।''
3. ब्रिटिश सरकार द्वारा जो मुकदमा दर्ज किया गया था वह ''ब्रिटिश सरकार बनाम मातादीन एवं अन्य'' के नाम से दर्ज किया था।
4. 08 अप्रैल 1857 को जब फॉसी दी गई थी तो उसमें सबसे पहले ''मातादीन वाल्मीकि'' को फांसी दी गई थी।
5. 08 अप्रैल 1857 को जब पहला कोर्ट मार्शल व पहली चार्ज शीट बनाई गई वह भी मातादीन वाल्मीकि के नाम पर बनाई गई थी।
6. संजीव नाथ ने अपनी पुस्तक "1857 की क्रांति के जनक नागवंशी मातादीन हेला" में मातादीन को 1857 की क्रांति का जनक बताया है।

### मुख्य तिथियॉ (Key dates) –

1. 29 मार्च 1857 (मातादीन एवं मंगल पांडे संवाद)
2. 01 अप्रैल 1857 (मंगल पांडे द्वारा विद्रोह)
3. 08 अप्रैल 1857 (मातादीन एवं मंगल पांडे फांसी)
4. 10 मई 1857 (मेरठ से विद्रोह का आगाज)
5. 31 मई 1857 (स्वतंत्रता संग्राम की तिथि)

## संदर्भ सूची (Bibliography)–

- बुक्स
- इंटरनेट
- सोसल मीडिया

कपिल बौद्ध (LL.B)